डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल : अनुभव के साथ सीख और सुधार

सारिया अली

डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल शिक्षकों के क्षमता संवर्धन के लिए आज़माया हुआ कारगर तरीक़ा है। इसमें सिखाने और सीखने वाले, दोनों सीखते हैं। इस लेख में शिक्षिका द्वारा डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल पर काम करने के अनुभव, और समझ में हुई वृद्धि को दर्ज करने का प्रयास किया गया है।

वयस्कों के क्षमता संवर्धन की प्रक्रिया में अकसर 'कोई' किसी के क्षमता वर्धन पर कार्य कर रहा होता है, और प्रतिभागी सुनते दिखाई देते हैं। शिक्षकों के साथ क्षमता संवर्धन पर काम करने के मायने अलग हैं। इसमें आप कुछ सिखाने से पहले ख़ुद सीखते हैं, उसके परिणाम देखते हैं, और सिखाते समय भी कुछ नया सीख रहे होते हैं। यह प्रक्रिया क्षमता संवर्धन के 'डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल' में काफ़ी ठीक तरीक़े से होती हुई नज़र आती है।

डेमॉन्स्ट्रेशन कार्यशाला क्या है, और इसे करने के चरण क्या हैं

डेमॉन्स्ट्रेशन शब्द का मतलब है 'किसी कार्य की प्रक्रिया को करके दिखाना'। डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल को आसान परिभाषा में समझें तो यह कार्यशाला का एक ऐसा स्वरूप है जिसमें एक शिक्षक, शिक्षण प्रक्रियाओं को वास्तविक कक्षा में क्रियान्वित करके दिखाते हैं, और प्रतिभागी शिक्षक पीछे बैठकर अवलोकन करते हैं।

डेमॉन्स्ट्रेशन के फ्रेम को निम्न बिन्दुओं से समझ सकते हैं–

1. एक शिक्षक विद्यार्थियों के साथ सक्रिय रूप से शिक्षण प्रक्रिया पर काम करते हैं जिसका असर उनके स्तर पर दिखता है। ऐसे ही शिक्षक की कक्षा में इसका आयोजन किया जाता है।
2. इस कार्यशाला में प्रतिभागी शिक्षक आमतौर पर उसी पंचायत / क्लस्टर का हो।
3. डेमॉन्स्ट्रेशन वाले दिन डेमो देने वाले शिक्षक विद्यार्थियों को कक्षा में पढ़ाते हैं, और प्रतिभागी शिक्षक पीछे बैठकर ध्यानपूर्वक अवलोकन करते हैं।
4. कक्षा समाप्त होने के बाद प्रतिभागी और डेमो शिक्षक के बीच सीख, चुनौती और आगे की योजना को लेकर बातचीत होती है।

मूलतः इस प्रकार से एक डेमॉन्स्ट्रेशन कार्यशाला आयोजित होती है। यद्यपि इस प्रक्रिया को सामान्यत: विद्यार्थियों की उपस्थिति में

> डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल को आसान परिभाषा में समझें तो यह कार्यशाला का एक ऐसा स्वरूप है जिसमें एक शिक्षक, शिक्षण प्रक्रियाओं को वास्तविक कक्षा में क्रियान्वित करके दिखाते हैं, और प्रतिभागी शिक्षक पीछे बैठकर अवलोकन करते हैं।

चित्र 1 : प्रतिभागी शिक्षकों की उपस्थिति में अपनी कक्षा प्रक्रियाओं का डेमो करते एक शिक्षक

चित्र 2 : सुबह की सभा में पूछे जा रहे सवालों के जवाब देते विद्यार्थी

वास्तविक कक्षा में ही आयोजित किया जाता है, लेकिन एक अन्य स्वरूप में यह बिना विद्यार्थियों के भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में केवल प्रतिभागी शिक्षक ही शामिल होते हैं, और डेमॉन्स्ट्रेशन विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए किया जाता है। इस लेख में फ़ोकस पहले वाले प्रकार पर करेंगे।

एक बेहतर डेमो का दृश्य

डेमो के फ्रेम को एक दृश्य से समझा जा सकता है। यह कार्यशाला चित्तौड़गढ़, राजस्थान के एक प्राथमिक विद्यालय में आयोजित की गई। यहाँ कुछ 35 विद्यार्थी हैं, और दो शिक्षक पढ़ाते हैं। डेमो हिन्दी विषय पर आयोजित किया गया, और पास के विद्यालयों के 9 हिन्दी शिक्षकों को प्रतिभागी के रूप में बुलाया गया।

हिन्दी के शिक्षक ने नियमित पाठ योजना से काम करना शुरू कर दिया था। निरन्तरता का प्रमाण विद्यार्थियों के भाषा के स्तर में दिखता है। यहाँ मॉर्निंग असेम्बली में भी भाषा व गणित की रोचक गतिविधियाँ कराई जाती हैं।

इस विद्यालय में डेमो कार्यशाला कुछ इस प्रकार आयोजित हुई–

डेमो से पहले की प्रक्रिया

1. शिक्षक ने निर्धारित किया कि वे राजस्थान स्टेट बोर्ड की हिन्दी की कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक में शामिल विजयदान देथा की कहानी 'कुरज री विनती' पर कार्य करेंगे। इसके लिए उन्होंने पहले 5 दिनों की पाठ योजना बनाई। डेमो योजना के पहले दिन होना था। (कुरज साइबेरियाई पक्षी हैं जो वर्षा ऋतु में राजस्थान आते हैं)। यह पाठ कक्षा 4 का है, लेकिन डेमो कक्षा के दौरान कक्षा 3 और 4 साथ में बैठने वाली थी।

2. तय किया गया कि कक्षा के साथ-साथ प्रतिभागियों को असेम्बली भी दिखाई जाएगी। यानी डेमो सुबह 7:30 बजे शुरू करने का सोचा गया। कक्षा का अवलोकन और उसके बाद की बातचीत मिलाकर, कार्यशाला 11:00 बजे तक आयोजित की जानी थी।

डेमो वाले दिन

1. कार्यशाला की शुरुआत असेम्बली से हुई। प्रतिभागियों से पीछे बैठकर अवलोकन करने को कहा गया।

2. विद्यार्थियों ने प्रार्थना करने के बाद एक कहानी का रोल-प्ले किया; कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों ने एक कविता सुनाई; और कक्षा 5 के विद्यार्थियों ने कुछ इबारती सवाल पूछे। मज़ेदार बात थी कि सभी विद्यार्थी पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दे रहे थे। प्रस्तुति दे रहे विद्यार्थियों में किसी प्रकार की झिझक नहीं थी। यह दर्शा रहा था कि विद्यार्थी इस प्रक्रिया से परिचित हैं, और यह निरन्तर की जाती है।

3. इसके बाद प्रतिभागी शिक्षकों के साथ कार्यशाला के स्वरूप और अपेक्षाओं पर बात की गई। जैसे–सभी को कक्षा में अवलोकन करते समय बीच में बात नहीं करनी है; विद्यार्थियों के साथ संवाद नहीं करना है; अपने अवलोकन दर्ज करते रहने हैं; अपने सवाल भी लिखकर रख लेने हैं; आदि।

4. सभी को भाषा की शिक्षण प्रक्रियाओं का पर्चा दिया गया, और कहा गया कि कक्षा के दौरान देखी गई प्रैक्टिस को चिह्नित करते चलें।

5. असेम्बली के बाद डेमो वाली कक्षा शुरू होनी थी। प्रतिभागी पीछे बैठे, विद्यार्थियों को शिक्षक ने बीच में गोल घेरे में बैठाया। विद्यार्थियों की सहजता के लिए शिक्षक ने पहले ही उन्हें बता दिया था कि कुछ लोग उनके साथ पढ़ने आ रहे हैं।

6. शिक्षक ने योजना अनुसार कुछ इस प्रकार काम किया–

   - पहले शिक्षक द्वारा वातावरण निर्माण के लिए विद्यार्थियों से एक कविता / कहानी सुनी गई, और पूछा गया कि वे कैसा महसूस कर रहे हैं, या यदि उन्हें पिछले दिन के कुछ अनुभव सुनाने हों? फिर विद्यार्थियों को पाठ का नाम बताया गया।
   - शिक्षक ने सन्दर्भ निर्माण करने के लिए कहानी से जुड़े कुछ सवाल किए। जैसे–खेतों का ध्यान किस-किस प्रकार रखा जाता है; कोई पक्षी खेत में आकर फ़सल खाए तो कैसे ध्यान रखते हैं; आदि।
   - अगले चरण में शिक्षक ने कहानी के चित्रों पर बातचीत की। विद्यार्थियों को ठीक से अवलोकन करने का मौक़ा दिया गया, और हर चित्र पर विभिन्न प्रकार के सवाल पूछे। उदाहरण के लिए, कुरज खेत पर क्या करने आई; किसान कुरज से क्या बात कर रहा होगा; आदि।
   - शिक्षक ने फिर कहानी को मौखिक रूप से हावभाव के साथ विद्यार्थियों को सुनाया जो काफ़ी रोचक था। उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए बीच-बीच में सवाल भी पूछते रहे। उदाहरणार्थ, कुरज ने सबसे पहले किससे विनती की; किसान ने किस प्रकार का लालच दिखाया; आदि।
   - कहानी सुनाने के बाद शिक्षक ने विद्यार्थियों से कहानी सुनी। इसमें सभी को कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कुछ विद्यार्थियों को आगे बुलाकर कहानी सुनाने को कहा गया।
   - शिक्षक ने कहानी का एक चार्ट बनाया हुआ था जिसमें उसे आसान शब्दों में लिखा गया था। इस प्रक्रिया के बाद उस चार्ट पर पहले शिक्षक ने उँगली रखकर ख़ुद पढ़ा, फिर विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए कहा। शिक्षक ने ख़ासकर उन विद्यार्थियों को मौक़ा दिया जो अभी पठन के शुरुआती स्तर पर थे। इस दौरान कुछ विद्यार्थी अटक रहे थे, कुछ अनुमान लगा रहे थे। तब शिक्षक ने शुरू की कुछ पंक्तियों को पढ़ने में विद्यार्थियों की मदद की।

चित्र 3 : डेमो के दौरान दिए जा रहे निर्देशों को समझते हुए प्रतिक्रिया देते विद्यार्थी

- आख़िर में शिक्षक ने उप-समूह में कार्य करवाया। कक्षा स्तर के विद्यार्थियों से कहानी को अपने शब्दों में लिखने के लिए कहा। कक्षा स्तर से पीछे के विद्यार्थियों को कहानी में आए कठिन शब्दों का चयन कर अपनी कॉपी में लिखने को कहा। यह समूह कठिन शब्द शिक्षक के लगाए चार्ट से लिख रहा था।

  यहाँ डेमो समाप्त हुआ। कुछ देर प्रतिभागी शिक्षकों ने विद्यार्थियों से कुछ सवाल पूछे। उन्हें विद्यार्थियों की कॉपी का अवलोकन भी करने दिया गया।

7. डेमो के बाद प्रतिभागियों से कुछ इस प्रकार बातचीत की गई–

   - आपको कक्षा में हो रही कौन-सी प्रक्रिया सबसे प्रभावी लगी?

     इसके जवाब अलग-अलग थे। जैसे–कहानी का हावभाव से वाचन रोचक था, और विद्यार्थी अच्छे से सुन रहे थे; चित्रों पर बातचीत प्रभावी थी जिससे वे ठीक से कहानी समझ पाए; पठन के दौरान उनका आत्मविश्वास प्रभावी था, और वे रुकते समय डर भी नहीं रहे थे; उप-समूह में काम की योजना अच्छी थी; आदि।

   - आपके हिसाब से कौन-कौन सी शिक्षण प्रक्रियाएँ होती हुई नज़र आ रही थीं, अपने पर्चे को देखकर बताइए?

     इसमें सभी शिक्षकों की प्रतिक्रिया ली गई, और पाया कि ज़्यादातर चरण हो रहे थे।

   - अपनी कक्षा में इनमें से कौन-सी चीज़ें करने का प्रयास करते हैं, और क्या नहीं हो पाती हैं?

     बताया गया कि मौखिक वाचन प्रभावी नहीं हो पाता जिस वजह से थोड़ा असहज महसूस होता है; चित्र पठन पर काम हो पाता है, लेकिन अपने शब्दों में कहानी नहीं लिखते हैं; आदि।

   - इस कार्यशाला के बाद आप कौन-सी 2-3 चीज़ें अपनी कक्षा में लागू करेंगे?

     प्रतिभागियों ने बताया कि मौखिक वाचन पर अभ्यास किया जाएगा, और चित्र पठन को पाठ योजना में सुनिश्चित किया जाएगा; विद्यार्थियों को पढ़ी गई कहानी सुनाने का अवसर दिया जाएगा; इत्यादि।

8. शिक्षक ने कहानी का चार्ट बनाया ताकि विद्यार्थियों को आसान शब्दों में कहानी समझ आ जाए। साथ ही, यह भी बात हुई कि कुछ प्रक्रियाओं को निरन्तर करने की ज़रूरत है। उदाहरण के लिए, कहानियों पर बातचीत, चित्रों का इस्तेमाल, मॉर्निंग असेम्बली में विद्यार्थियों को सुनना, इत्यादि। आख़िर में शिक्षक ने अपनी आगे की योजना भी बताई।

यह एक अच्छी डेमो कार्यशाला थी। इससे प्रतीत हो रहा था कि शिक्षक ने जिन प्रक्रियाओं को अपनाया, वे इन्हें निरन्तर करते हैं। विद्यार्थियों के साथ नई कहानी पर कार्य किया गया। उनकी सहज प्रतिक्रिया देखकर स्पष्ट हो रहा था कि उन्होंने बुनियादी दक्षताएँ हासिल की हुई हैं।

इस पूरे दृश्य से एक अच्छी डेमो कार्यशाला की समझ बनाई जा सकती है।

> “'वयस्क द्वारा सीखने' का बड़ा हिस्सा है सिखाने वाले का निरन्तर सीखते रहना। डेमो के लिए शिक्षक की तैयारी इस बात को प्रमाणित करती है।”

इस मॉडल को प्रभावी क्यों मानें

डेमो करने के लिए शिक्षक ने 2-3 पाठों पर पहले ही काम करके देख लिया था। वे पूरी तरह सहज थे, और प्रक्रिया पर विश्वास पा चुके थे। इस पूरी प्रक्रिया में वे स्वयं एक बेहतर शिक्षक के रूप में बढ़ पाए, और सुगमकर्ता के रूप में कई कार्यशालाओं में सत्र लेते हैं। इससे कुछ बिन्दु समझ आते हैं–

1. 'वयस्क द्वारा सीखने' का बड़ा हिस्सा है सिखाने वाले का निरन्तर सीखते रहना। डेमो के लिए शिक्षक की तैयारी इस बात को प्रमाणित करती है।

   शिक्षक जब अपनी शिक्षण पद्धति को व्यवस्थित कर विद्यार्थियों के स्तर में इसका असर देखते हैं तो उनके पढ़ाने के तरीक़ों में एक दीर्घकालीन बदलाव जैसा नज़र आता है। परिणाम देखने के बाद ही अन्य लोगों के साथ साझा किया जाता है।

2. प्रतिभागियों में बदलाव के नज़रिए से तीन बातें समझ आई हैं–

   - एक, जब विद्यार्थियों का स्तर देखते हैं, और पाते हैं कि किसी विशेष शिक्षण पद्धति के माध्यम से विद्यार्थी सीख रहे हैं तब उस पद्धति पर विश्वास बनता है।
   - दूसरा, प्रतिभागियों का यह महसूस करना कि यदि मैं भी ऐसा कुछ करूँ तब मैं भी अपने साथियों को कुछ सिखा पाऊँगा।
   - तीसरा, एक-सी परिस्थितियों में किसी की सफलता देखने से यह विश्वास बनता है कि अपने विद्यालय में भी कुछ किया जा सकता है।

डेमो मॉडल दोनों ही पक्षों–सीखने वाले और सिखाने वाले–के क्षमता संवर्धन के लिए कारगर हैं। हमारे अनुभव में डेमो देने के बाद कई प्रतिभागी शिक्षकों का मनोबल बढ़ता हुआ दिखा, और उन्हें अन्य मंचों पर भी सुगमकर्ता बनाया गया। कई ऐसे भी शिक्षक हैं जिन्होंने अपना शोध पत्र (पर्चा) लिखा है, और राज्य स्तरीय सेमिनारों में भी भागीदारी की है। यह सब इस मॉडल के प्रभावी होने को और स्पष्ट करता है।

> डेमॉन्स्ट्रेशन करने का उद्देश्य यह दर्शाना नहीं है कि विद्यार्थियों को कितना आता है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि शिक्षक ऐसा क्या काम कर रहे हैं जो विद्यार्थियों के स्तर में सुधार ला रहा है।

अनुभवों से सीखना और उन्हें सुधारना

प्रस्तुत की गई कार्यशाला एक बेहतर उदाहरण है, लेकिन शुरू के अनुभवों ने हमें कुछ अहम बातें भी सिखाईं जिनसे कार्यशालाओं की गुणवत्ता को सुनिश्चित किया जा सकता है–

1. शुरू की कुछ कार्यशालाओं में देखा गया कि शिक्षक ने उसी विषयवस्तु पर डेमो दिया जो पहले भी हो चुका था। इसका मतलब है, विद्यार्थियों को वही गतिविधि, वही सवाल, वही टास्क दिए गए। कुछ हद तक यह नाट्य रूपान्तरण जैसा लग रहा था।

   ऐसा होना इस बात का प्रतीक नहीं होता कि यदि विद्यार्थी पढ़ाने की पद्धतियों से परिचित होते हैं तो विषयवस्तु में बदलाव उनकी प्रतिक्रिया पर असर नहीं डालता, जैसा हमने डेमो के दृश्य में देखा।

   इससे यह भी पता नहीं चलता है कि कक्षा में आई चुनौतियों के दौरान वे शिक्षक किस प्रकार से अपनी योजना सुधारते हैं, और विद्यार्थियों को सिखाने के लिए अलग-अलग प्रयास करते हैं।

2. कुछ जगह यह भी देखा गया कि डेमो दे रहे शिक्षक सब कुछ श्रेष्ठ करने के चक्कर में असहज हो रहे थे। शिक्षकों की सहजता बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसका मतलब है, उन्हें इस पर ध्यान नहीं देना है कि विद्यार्थी कुछ ग़लत न बोल दें। ऐसा करने से झलकता है कि शिक्षक असहज हैं। यह प्रक्रिया में बाधा जैसा दिखता है।

   समझने वाली बात यह है कि डेमॉन्स्ट्रेशन करने का उद्देश्य यह दर्शाना नहीं है कि विद्यार्थियों को कितना आता है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि शिक्षक ऐसा क्या काम कर रहे हैं जो विद्यार्थियों के स्तर में सुधार ला रहा है।

कुछ दूर आए हैं, अभी और दूर जाना है

इस लेख में हमने एक डेमो के दृश्य से समझा कि कार्यशाला में क्या होता है, यह प्रभावी क्यों है, और किन चीज़ों को डेमो के दौरान नहीं करना चाहिए। इससे शिक्षकों का शिक्षण प्रक्रियाओं पर भरोसा बनते देखा गया है। ऊपर दी गई सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इन तीन चीज़ों को महत्ता के साथ याद रखना ज़रूरी है–

1. जो शिक्षक निरन्तरता से काम कर विद्यार्थियों में असर देख पाएँ, वहाँ इसे आयोजित करना।
2. प्रतिभागियों को स्पष्ट पता होना कि उन्हें अवलोकन कैसे करना है, और क्या दर्ज करना है।
3. डेमो के बाद हर प्रतिभागी को योजनाबद्ध तरीक़े से आगे बढ़ने का नज़रिया मिले, इसका सुगमकर्ता को विशेष ध्यान रखना है।

सारिया अली, पिछले 6 साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रही हैं। एक प्रैक्टिशनर के रूप में, उनकी इस सवाल पर नियमित रूप से विचार-विमर्श करने में गहरी रुचि रहती है कि वयस्क, ख़ासतौर पर शिक्षक, कैसे सीखते हैं। वर्तमान में चित्तौड़गढ़, राजस्थान में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : sariya.ali@azimpremjifoundation.org